स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

पाठ 12

—महावीर प्रसाद द्विवेदी

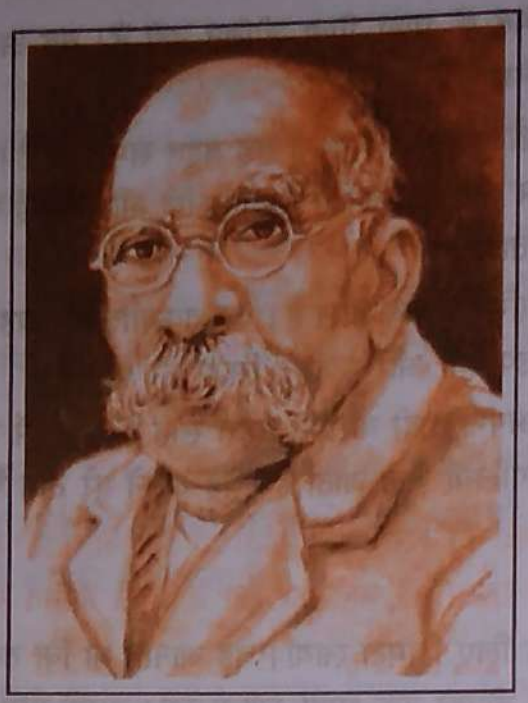

1. नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं। संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गँवार होने का। अच्छा तो उत्तररामचरित में ऋषियों की वेदांतवादिनी पत्नियाँ कौन-सी भाषा बोलती थीं? उनकी संस्कृत क्या कोई गँवारी संस्कृत थी? भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस जमाने के हैं उस जमाने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। (पृष्ठ सं. 55)

शब्दार्थ—प्राकृत = एक प्राचीन भाषा। प्रमाण = सबूत। उत्तररामचरित = भवभूति द्वारा लिखित संस्कृत नाटक। वेदांतवादिनी = वेदांत नामक दर्शन शास्त्र का ज्ञान रखने वाली। समुदाय = समाज।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। द्विवेदी जी के समय अनेक पुरातन विचारों वाले लोग स्त्रियों को पढ़ाने-लिखाने का विरोध करते थे। उनके तर्क निराधार होते थे परन्तु वे अपनी बातों के पक्ष में कुछ बातें कहते थे। उनका कहना था कि प्राचीन भारत में स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी नहीं होती थीं। संस्कृत नाटकों के स्त्री पात्र प्राकृत में बोलते थे। प्राकृत अपढ़ों की भाषा थी।

व्याख्या—प्राकृत को अपढ़ों की भाषा बताना अज्ञान है। नाटकों में स्त्री पात्र प्राकृत बोलते थे क्योंकि वे पढ़े-लिखे नहीं थे। द्विवेदी जी ने इसको कुतर्क माना है और कहा है कि नाटकों में स्त्रियों के प्राकृत बोलने से यह प्रमाणित नहीं होता कि उस समय स्त्रियाँ अपढ़ होती थीं। प्राकृत बोलने वाले अशिक्षित नहीं थे। इससे इतना ही पता चलता है कि प्राचीनकाल में जो संस्कृत नहीं बोल पाते थे, वे प्राकृत बोलते थे। प्राकृत जनता में सबसे अधिक प्रचलित थी। अतः स्त्रियाँ संस्कृत न बोल पाने की स्थिति में प्राकृत बोलती थीं। संस्कृत न बोल पाने से यह सिद्ध नहीं होता कि वे गँवार थीं। लेखक पूछते हैं कि 'उत्तररामचरित' में ऋषियों की पत्नियाँ, जो वेदान्त का ज्ञान रखती थीं, वे कौन-

बोलती थीं और उनकी संस्कृत गँवारों की भाषा नहीं थी। इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता कि कालिदास और भवभूति आदि के नाटकों के समय में सभी पढ़े-लिखे लोग संस्कृत ही बोलते थे। कुछ लोग संस्कृत तो ज्यादातर लोग प्राकृत बोलते थे। लेखक चुनौती देते हैं कि पहले यह बात प्रमाणित हो जाय तभी प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ माना जा सकता है।

विशेष—1. लेखक की भाषा तत्सम शब्दावली वाली, विषयानुरूप तथा सुबोध है। 2. शैली विवेचनात्मक है। वार्तालाप शैली का भी प्रयोग है। 3. लेखक का कहना है कि प्राकृत बोलना अपढ़ होने का प्रमाण नहीं है। 4. प्राकृत जनता की भाषा थी। कुछ लोग ही संस्कृत बोलते थे। अधिकांश लोग प्राकृत बोलते थे। प्राकृत बोलने वाले अशिक्षित नहीं थे।

2. इसका क्या सबूत कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी? सबूत तो प्राकृत के चलन के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों उपदेश देते? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस जमाने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं। जिन पंडितों ने गाथा-सप्तशती, सेतुबंध-महाकाव्य और कुमारपालचरित आदि ग्रंथ प्राकृत में बनाए हैं, वे यदि अपढ़ और गँवार थे तो हिन्दी के प्रसिद्ध से भी प्रसिद्ध अखबार का सम्पादक इस जमाने में अपढ़ और गँवार कहा जा सकता है; क्योंकि वह अपने जमाने की प्रचलित भाषा में अखबार लिखता है। **(पृष्ठ सं. 55)**

शब्दार्थ—**शाक्य मुनि** = महात्मा बुद्ध। **चेले** = शिष्य। **धर्मोपदेश** = धर्म पर उपदेश। **त्रिपिटक** = बौद्ध धर्म का एक ग्रन्थ। **सर्वसाधारण** = सारी जनता, आम आदमी। **चिह्न** = प्रमाण।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित "स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन" पाठ से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। प्राचीन काल में संस्कृत कुछ लोग ही बोलते थे। अधिकांश लोग प्राकृत भाषा का ही प्रयोग करते थे। प्राकृत लोकप्रिय जनभाषा थी। वह गँवार भाषा न थी और न प्राकृत बोलने वाले अशिक्षित थे।

व्याख्या—लेखक द्विवेदी जी कहते हैं कि इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि उस समय प्राकृत जनता की बोलचाल की भाषा नहीं थी। उस समय प्राकृत ही प्रचलित थी। इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। यदि प्राकृत का प्रचलन जन सामान्य में न होता तो प्राकृत में अनेक ग्रंथ नहीं लिखे जाते। गौतम बुद्ध भी बौद्ध धर्म के उपदेश प्राकृत में नहीं देते। बौद्धों और जैनों के हजारों ग्रंथ प्राकृत में इसी कारण लिखे गये क्योंकि प्राकृत लोक प्रचलित भाषा थी। बौद्धों के 'त्रिपिटक' नामक ग्रंथ की रचना प्राकृत में इसी कारण हुई थी कि सभी लोग प्राकृत बोलते थे। अतः प्राकृत बोलने और पढ़ने को आशिक्षित होने की पहचान नहीं माना जा सकता। यदि यह माना जाय कि 'गाथा सप्तशती', 'सेतुबंध महाकाव्य' तथा 'कुमारपाल चरित' आदि पुस्तकों के रचयिता अपढ़ थे तो हिन्दी के सबसे ज्यादा प्रसिद्ध अखबार के सम्पादक को भी अपढ़ ही मानना पड़ेगा क्योंकि वह भी अपने समय की प्रचलित भाषाओं में ही समाचार लिखता है।

विशेष—1. भाषा सरल, सुबोध तथा प्रवाहपूर्ण है। 2. शैली विचारात्मक है। 3. द्विवेदी जी ने प्राकृत के जनता में प्रचलित होने का उल्लेख किया है। 4. प्राकृत को जनभाषा माना गया है तथा उसको अशिक्षितों और गँवारों की भाषा बताने का खंडन किया गया है।

3. पुराने जमाने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय न था। फिर नियमबद्ध प्रणाली का उल्लेख आदि पुराणों में न मिले तो क्या आश्चर्य। और, उल्लेख उसका कहीं रहा हो, पर नष्ट हो गया हो तो? पुराने जमाने में विमान उड़ते थे। बताइए उनको बनाने की विद्या सिखाने वाला कोई शास्त्र! बड़े-बड़े जहाजों पर सवार होकर लोग द्वीपांतरों को जाते थे। दिखाइए, जहाज बनाने की नियमबद्ध प्रणाली के दर्शक ग्रंथ। पुराणादि में विमानों और जहाजों द्वारा की गई यात्राओं के हवाले देखकर उनका अस्तित्व तो हम बड़े गर्व से स्वीकार करते हैं, परन्तु पुराने ग्रंथों में अनेक प्रगल्भ पंडिताओं के नामोल्लेख देखकर भी कुछ लोग **(पृष्ठ सं. 55)**

शब्दार्थ—प्रगल्भ = प्रतिभाशालिनी, गंभीर ज्ञान रखने वाली। पंडिता = विदुषी, ज्ञान रखने वाली। नामोल्लेख = नाम बताना। तत्कालीन = उस समय की।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। द्विवेदी जी ने स्त्री-शिक्षा के विरोधियों का यह कुतर्क स्वीकार नहीं किया कि पहले यदि भारत की स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी होतीं तो किसी विश्वविद्यालय के नाम का उल्लेख मिलता, पुराणों में इस तथ्य का वर्णन अवश्य मिलता। ऐसा न होना ही इस बात का प्रमाण है कि स्त्रियों को पढ़ाने का रिवाज पहले नहीं था।

व्याख्या—द्विवेदी जी कहते हैं कि प्राचीन समय में स्त्रियों की पढ़ाई के लिए कोई विश्वविद्यालय नहीं बना था। स्त्री-शिक्षा का उल्लेख पुराणों में न मिलना आश्चर्य की बात नहीं है। यह भी सम्भव है कि इसका उल्लेख तो किया गया हो परन्तु वह नष्ट हो गया हो। इन बातों के अभाव में स्त्री-शिक्षा का होना ही अस्वीकार नहीं किया जा सकता। प्राचीन काल में वायुयान उड़ते थे। विमान बनाने की कला सिखाने वाला कोई शास्त्र तो उपलब्ध नहीं है। लोग जहाजों में बैठकर देश-विदेश की यात्रा करते थे। ऐसा कोई ग्रंथ नहीं मिलता जिसमें जहाज बनाने का तरीका बताया गया हो। पुराणों इत्यादि धार्मिक पुस्तकों में हम पढ़ते हैं कि उस समय लोग विमानों और जहाजों में यात्रा करते थे। यह पढ़कर हम विमानों और जहाजों का होना तथा उनमें यात्रायें करना गर्वपूर्वक स्वीकार कर लेते हैं परन्तु पुराने ग्रंथों में अनेक प्रतिभाशालिनी विदुषीमहिलाओं के नामों का उल्लेख होने पर भी कुछ लोग भारत की उस समय की स्त्रियों को बिना पढ़ी-लिखी, असभ्य और मूर्ख मानते हैं।

विशेष—1. लेखक ने तर्कपूर्वक सिद्ध किया है कि प्राचीन भारत में स्त्रियाँ शिक्षित हुआ करती थीं। 2. यह बात दुःखद है कि पुराण इत्यादि ग्रंथों में विदुषी महिलाओं के बारे में लिखा होने पर भी कुछ लोग दुराग्रहवश प्राचीन स्त्रियों को अपढ़ मानते हैं। 3. भाषा संस्कृतनिष्ठ है, प्रवाहयुक्त है। 4. शैली विचारात्मक है।

4. अत्रि की पत्नी पत्नी-धर्म पर व्याख्यान देते समय घंटों पांडित्य प्रकट करे, गार्गी बड़े-बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दे, मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणी शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दे। गजब! इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी! यह सब पापी पढ़ने का अपराध है। न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुकाबला करतीं। यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने ही का कुफल है। समझे। स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट! ऐसी ही दलीलों और दृष्टांतों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं। (पृष्ठ सं. 56)

शब्दार्थ—पत्नी धर्म = पत्नी के कर्तव्य। व्याख्यान = भाषण। पांडित्य = विद्वता, ज्ञान। गार्गी = वैदिक कालीन एक विदुषी नारी। ब्रह्मवादियों = ब्रह्मज्ञान पर शास्त्रार्थ करने वाले। सहधर्मचारिणी = पत्नी। छक्के छुड़ाना (मुहा.) = निरुत्तर कर देना, पराजित करना। गजब = महान आश्चर्य, पराकाष्ठा। दुराचार = बुरा काम। कुफल = बुरा परिणाम। कालकूट = विष, हानिकारक। पीयूष = अमृत, लाभदायक।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' से लिया गया है। इसके लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। द्विवेदी जी कहते हैं कि प्राचीन भारत में स्त्रियाँ सुशिक्षित होती थीं। उनकी बुद्धिमत्ता तथा तर्कशीलता के समक्ष अनेक बुद्धिमान पुरुष नतमस्तक होते थे। परन्तु दुराग्रही लोग प्राचीन भारत की स्त्रियों को अशिक्षित ही मानते हैं। ऊपर से वे शिक्षा के कारण स्त्रियों पर दुर्विनीत होने का आरोप भी लगाते हैं।

व्याख्या—स्त्री शिक्षा के विरोधियों पर कठोर व्यंग्य प्रहार करते हुए द्विवेदी जी कहते हैं कि ऐसी सोच देश को पतन की ओर ले जाने वाली है। प्राचीन काल में ऋषि अत्रि की पत्नी अनसूया ने पत्नी-धर्म पर घंटों व्याख्यान देकर अपना पांडित्य प्रमाणित किया था। गार्गी अनेक कुशल ब्रह्मवादी पुरुषों को शास्त्रार्थ में हरा देती थी। मंडन मिश्र की पत्नी ने शास्त्रार्थ में आदि शंकराचार्य को भी पराजित कर दिया था। विदुषी महिलाओं के ऐसे प्रशंसनीय कार्य भी दुराग्रही स्त्री-शिक्षा विरोधियों को प्रशंसनीय नहीं लगते। उनको उनके कार्य भयानक लगते हैं। उनके मत में स्त्रियों का पुरुषों से मुकाबला करना उचित नहीं है। यह दुराचार है तथा इसका कारण स्त्री-शिक्षा ही है। यदि स्त्रियाँ पढ़ाई न करतीं तो पूजनीय पुरुषों

अनुचित कार्य स्त्रियों को पढ़ाने का ही दुष्परिणाम है। द्विवेदी जी आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि जो शिक्षा पुरुषों के लिए अमृत का घूँट है वही स्त्रियों के लिए भयानक विष है। ऐसी विचारधारा, ऐसे तर्क, ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करके लोग स्त्रियों को अनपढ़ बनाये रखना चाहते हैं। वे सोचते हैं कि इससे भारतवर्ष के गौरव में वृद्धि होगी।

विशेष—1. स्त्री-शिक्षा को स्त्रियों को दुर्विनीत बनाने वाली बताना उचित चिन्तन नहीं है। 2. भाषा संस्कृतनिष्ठ तथा प्रवाहपूर्ण है। 3. शैली व्यंग्यात्मक है। स्त्री-शिक्षा विरोधियों की मनोवृत्ति पर कठोर प्रहार किया गया है।

5. मान लीजिए कि पुराने जमाने में भारत की एक भी स्त्री पढ़ी-लिखी न थी। न सही। उस समय स्त्रियों को पढ़ाने की जरूरत न समझी गई होगी। पर अब तो है। अतएव पढ़ाना चाहिए। हमने सैकड़ों पुराने नियमों, आदेशों और प्रणालियों को तोड़ दिया है या नहीं? तो, चलिए, स्त्रियों को अपढ़ रखने की इस पुरानी चाल को भी तोड़ दें। हमारी प्रार्थना तो यह है कि स्त्री-शिक्षा के विपक्षियों को क्षणभर के लिए भी इस कल्पना को अपने मन में स्थान न देना चाहिए कि पुराने जमाने में यहाँ की सारी स्त्रियाँ अपढ़ थीं अथवा उन्हें पढ़ने की आज्ञा न थी। (पृष्ठ सं. 56)

शब्दार्थ—विपक्षियों = विरोधियों। क्षणभर = थोड़े समय के लिए।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' शीर्षक निबन्ध से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। द्विवेदी जी ने स्त्री-शिक्षा को समाजोपयोगी तथा देश के लिए हितकारी माना है। उनका कहना है कि पुराने समय में स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी होती थीं अथवा नहीं किन्तु आज स्त्री-शिक्षा अत्यन्त आवश्यक हो गई है। स्त्रियों को शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए।

व्याख्या—द्विवेदी जी कहते हैं कि स्त्री-शिक्षा के विरोधियों का यह कुतर्क कि पुराने समय में स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी नहीं होती थीं। थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं। नहीं होती होंगी शिक्षित! हो सकता है कि उस समय उनको पढ़ाने की आवश्यकता ही नहीं रही होगी। परन्तु आज के समय में स्त्रियों को शिक्षा देना आवश्यक हो गया है। अतः अब उनको अवश्य पढ़ाना चाहिए। भारतीयों ने सैकड़ों पुराने नियमों, नीतियों, आदेशों और प्रथाओं को तोड़ दिया है। अब वे मान्य नहीं रही हैं। तो अब स्त्रियों को अनपढ़ रखने की पुरानी रीति को भी तोड़ देने में कोई हर्ज नहीं है। लेखक निवेदन करता है कि स्त्री-शिक्षा के विरोधी थोड़ी देर के लिए भी इस बात को अपने मन में स्थान न दें कि प्राचीन भारत में स्त्रियाँ अनपढ़ होती थीं अथवा उनको पढ़ने की आज्ञा समाज से प्राप्त नहीं थी। इस बात को भुलाकर अब स्त्रियों को पढ़ने देना चाहिए।

विशेष—1. भाषा संस्कृतनिष्ठ, सरल तथा प्रवाहपूर्ण है। 2. शैली विचारात्मक तथा उपदेशात्मक है। 3. स्त्री-शिक्षा पर बल दिया गया है। 4. पुरानी बातों को भुलाने का आग्रह भी किया गया है।

6. शकुंतला ने दुष्यंत को कटु वाक्य कहकर कौन-सी अस्वाभाविकता दिखाई? क्या वह यह कहती कि—"आर्य पुत्र, शाबाश! बड़ा अच्छा काम किया जो मेरे साथ गांधर्व-विवाह करके मुकर गए। नीति, न्याय, सदाचार और धर्म की आप प्रत्यक्ष मूर्ति हैं।" पत्नी पर घोर से घोर अत्याचार करके जो उससे ऐसी आशा रखते हैं वे मनुष्य-स्वभाव का किंचित भी ज्ञान नहीं रखते। (पृष्ठ सं. 57)

शब्दार्थ—कटुवाक्य = कठोर वचन, कड़वी बात। अस्वाभाविकता = स्वभाव के विरुद्ध होना। आर्यपुत्र = पति के लिए प्राचीन सम्मानपूर्ण सम्बोधन। गांधर्व विवाह = प्रेम विवाह। मुकर जाना = अस्वीकार करना, पलट जाना। प्रत्यक्ष मूर्ति = साक्षात्कार स्वरूप। किंचित = थोड़ा-सा।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन पाठ से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। स्त्री-शिक्षा के विरोधियों का यह कहना है कि शिक्ष

व्याख्या—द्विवेदी जी पूछते हैं कि दुष्यंत के प्रति शकुंतला के कथन में कटुता है तो इसका कारण क्या है? दुष्यंत ने उससे गांधर्व-विवाह किया था और सामने आने पर पहचानने से मना कर दिया था। इससे अपमानित शकुंतला के मुख से स्वभावतः ही कटु वचन निकल पड़े थे। इसमें अस्वाभाविक कुछ भी नहीं है। क्या शकुंतला को दुष्यंत से विनम्रतापूर्वक कहना चाहिए था—हे आर्य पुत्र! आपने मेरे साथ गांधर्व-विवाह किया। फिर आप मुझको भूल गये हैं और मुझे पहचान भी नहीं रहे हैं। आपके इस श्रेष्ठ कार्य की मैं प्रशंसा करती हूँ। आपके इस आचरण को देखकर लगता है कि आप नीति, न्याय, धर्म और सदाचार के साकार स्वरूप हैं। जो पुरुष पत्नी के साथ बुरे से बुरा और अत्याचारपूर्ण आचरण करते हैं, फिर भी उससे सद्व्यवहार और विनम्रता की आशा रखते हैं, उनको मनुष्य के स्वभाव के बारे में कोई ज्ञान नहीं होता। अपमानित पत्नी की ऐसी प्रतिक्रिया होना अत्यन्त स्वाभाविक बात है।

विशेष—1. भाषा संस्कृतनिष्ठ, प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है। 2. शैली व्यंग्यात्मक है। 3. स्त्री-शिक्षा के विरोधियों के स्त्री-स्वभाव के अज्ञान पर प्रहार किया गया है। 4. दुष्यंत के प्रति शकुंतला के दुर्वचन को लेखक ने उसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया माना है।

7. सीता का यह संदेश कटु नहीं तो क्या मीठा है? 'राजा' मात्र कहकर उनके पास अपना संदेसा भेजा। यह उक्ति न किसी गँवार स्त्री की; किन्तु महाब्रह्मज्ञानी राजा जनक की लड़की और मन्वादि महर्षियों के धर्मशास्त्रों का ज्ञान रखने वाली रानी को—

नृपस्य वर्णाश्रमपालनं यत्
स एव धर्मो मनुना प्रणीतः

सीता की धर्मशास्त्रज्ञता का यह प्रमाण, वहीं, आगे चलकर, कुछ ही दूर पर, कवि ने दिया है सीता-परित्याग के कारण वाल्मीकि के समान शांत, नीतिज्ञ और क्षमाशील तपस्वी तक ने—'अस्त्येव मन्युर्भरताग्रजे मे' कहकर रामचंद्र पर क्रोध प्रकट किया है। अतएव, शकुंतला की तरह, अपने परित्याग को अन्याय समझने वाली सीता का रामचंद्र के विषय में, कटुवाक्य कहना सर्वथा स्वाभाविक है। न यह पढ़ने-लिखने का परिणाम है न गँवारपन का, न अकुलीनता का। (पृष्ठ सं. 57)

शब्दार्थ—उक्ति = कथन। महाब्रह्मज्ञानी = ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ। मन्वादि = मनु आदि। धर्मशास्त्रज्ञता = धर्मशास्त्रों का ज्ञान। परित्याग = छोड़ देना, त्याग कर देना। नीतिज्ञ = नीति को जानने वाला। अकुलीनता = अच्छे कुल का न होना।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यखण्ड हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित निबन्ध 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' से लिया गया है। कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' नाटक में राजा दुष्यन्त के दुर्व्यवहार से आहत शकुंतला ने उनसे कटु वचन कहे थे। द्विवेदी जी के अनुसार यह अपमानित शकुंतला की स्वभाव सिद्ध प्रतिक्रिया थी। राम के द्वारा छलपूर्वक सीता का परित्याग करने पर कालिदास ने सीता द्वारा कुछ इसी प्रकार का कथन राम से कहलवाया है कि क्या उसको लक्ष्मण द्वारा चुपचाप वन में छुड़वा देना उनकी महत्ता और विद्वत्ता को शोभा देता है।

व्याख्या—लक्ष्मण सीता को वन में छोड़कर जा रहे थे। सीता ने उनके द्वारा राम को संदेश भेजा और पूछा था कि क्या राम का यह कार्य न्यायसंगत था और उनकी कुलीनता के अनुरूप था? सीता के इस संदेश को भी मधुर शब्दों से युक्त तथा विनम्रतापूर्ण नहीं माना जा सकता। सीता ने राम को केवल राजा शब्द से संबोधित किया है। उनको प्रियतम अथवा आर्यपुत्र नहीं कहा। इससे राम के आचरण के प्रति सीता की कटुता स्पष्ट होती है। सीता कोई गँवार और अपढ़ स्त्री नहीं थीं। वह महा ब्रह्मज्ञानी राजा जनक की पुत्री थीं। उनको मनु इत्यादि महर्षियों द्वारा रचित धर्मशास्त्रों का ज्ञान था। इसका प्रमाण कवि ने आगे दिया है। सीता ने मनु द्वारा राजा के लिए प्रणीत वर्ण और आश्रम के नियम को पालन करने की बाध्यता उल्लेख किया है। सीता का परित्याग राम का अच्छा काम नहीं था। शांत रहने वाले, क्षमाशील और नीति के ज्ञाता तपस्वी वाल्मीकि ने भी राम के प्रति क्रोध व्यक्त किया है। अतः शकुंतला के समान ही अपने परित्याग पर सीता ने राम को जो कटुतापूर्ण संदेश भेजा उसमें कुछ भी अस्वाभाविक और अनुचित नहीं था। इसको शिक्षा का दुष्परिणाम नहीं कहा जा सकता। इसमें कुछ भी असभ्यतापूर्ण नहीं है। इसके कारण संदेश-प्रेषिका सीता को नीच कुल में पैदा होने वाली नहीं माना जा सकता।

विशेष—1. लेखक ने सीता द्वारा राम को प्रेषित कटु संदेश को स्वाभाविक कथन माना है। 2. उनके इस कथन का कारण अकुलीनता, असभ्यता और उनका पढ़-लिखकर अविनीत होना नहीं है। 3. भाषा प्रवाहपूर्ण तथा विषयानुकूल है। 4. शैली विचारात्मक है।

8. पढ़ने-लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीज उसमें हरगिज नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं। अपढ़ों और पढ़े-लिखों, दोनों से। अनर्थ, दुराचार और पापाचार के कारण और ही होते हैं और वे व्यक्ति-विशेष का चाल-चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए। (पृष्ठ सं. 57)

शब्दार्थ—बीज = मूल कारण। हर्गिज नहीं = कदापि नहीं। पापाचार = पापपूर्ण आचरण।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ से लिया गया है। इसके लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। स्त्री-शिक्षा को कुछ लोग अनर्थ का कारण मानते हैं। वे स्त्रियों के पढ़ने-लिखने का विरोध करते हैं। द्विवेदी जी इससे सहमत नहीं हैं। उनके मत में अनर्थ का कारण शिक्षा नहीं होती।

व्याख्या—लेखक का मानना है कि पढ़ने-लिखने से अनर्थ नहीं होता। शिक्षा में अनर्थकारक कोई बात नहीं होती। अनर्थ अर्थात् अनुचित आचरण-व्यवहार का कारण शिक्षा में निहित नहीं है। अनुचित आचरण स्त्री-पुरुष दोनों ही करते हैं। पढ़े तथा अपढ़ दोनों का व्यवहार अनुचित हो सकता है। अनर्थ का कारण शिक्षा न होकर किसी मनुष्य का खराब आचरण और पापपूर्ण व्यवहार होता है। किसी मनुष्य का आचरण देखकर अनर्थ के कारण का पता चल जाता है। इसके लिए शिक्षा को दोष देना ठीक नहीं है। स्त्रियों को शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए।

विशेष—1. भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण है। शब्द-चयन विषयानुरूप है। 2. शैली विचारात्मक है। 3. अनर्थ का कारण स्त्री शिक्षा को नहीं माना जा सकता। 4. स्त्रियों को पढ़ाने पर बल दिया गया है।

8. 'शिक्षा' बहुत व्यापक शब्द है। उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है। पढ़ना-लिखना भी उसी के अन्तर्गत है। इस देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा-प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलिज बंद कर दिए जाएँ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देनी चाहिए और कहाँ पर देनी चाहिए—घर में या स्कूल में—इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आवे सो कीजिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कहिए कि स्वयं पढ़ने-लिखने में कोई दोष है—वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह-सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है। (पृष्ठ सं. 58)

शब्दार्थ—व्यापक = विस्तृत। समावेश = सम्मिलित किया जाना, शामिल करना। अनर्थकारी = हानि पहुँचाने वाला। संशोधन = सुधार। उत्पादक = उत्पन्न करने वाला। गृह सुख = पारिवारिक सुख। सोलहों आने मिथ्या = पूरी तरह झूठ।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबन्ध 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ से लिया गया है। द्विवेदी जी ने स्त्री-शिक्षा के विरोध को समाज विरोधी कार्य माना है। शिक्षा में अनेक बातें सम्मिलित हैं, पढ़ना-लिखना भी उनमें से एक है। पढ़ने से स्त्रियों के चरित्र में कोई दोष उत्पन्न नहीं होता है। यह कहकर लेखक ने स्त्रियों को पढ़ाने पर जोर दिया है।

व्याख्या—द्विवेदी जी बता रहे हैं कि शिक्षा में अनेक बातें सम्मिलित हैं। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। शिक्षा में सीखने के लायक अनेक विषय सम्मिलित होते हैं। पढ़ना-लिखना सीखना भी उनमें से एक है। यह भी शिक्षा का एक अंग

ताना ठीक नहीं है। आवश्यकता शिक्षा पद्धति के दोषों को दूर करने की है न वि
त्रयों को पढ़ाना ठीक न मानने वालों को शिक्षा-पद्धति के दोषों को दूर करन
नहीं बताना चाहिए। लड़कों के लिए भी शिक्षा की अच्छी व्यवस्था नहीं है। यि
ी स्कूल और कॉलेजों को बंद कर देना उचित होगा? स्त्रियों की शिक्षा-प्रणाली में
ड़कियों की पढ़ाई के बारे में इन बातों पर विचार करना अनुचित नहीं है कि उनको क
नी है। उनको घर पर पढ़ाना है या स्कूल में? इन बातों पर विचार करना, तर्क-वि
ई रोकना उचित नहीं है। पढ़ने-लिखने को दोषपूर्ण बताना अनर्थकारी है। पढ़ाई से
की सुख-शान्ति भंग होती है। इस तरह की बातें कहना पूरी तरह असत्य और अ
लेखक शिक्षा-प्रणाली को दोषपूर्ण स्वीकार करते हुए उसमें संशोधन के लिए सहम
ा स्त्री-शिक्षा का ही विरोध करना पूर्णतः अनुचित कार्य है। 3. भाषा सरल, विषय
साथ अन्य (यथा अँग्रेजी, उर्दू) भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। 4. शैली